संत तथा शरण साहित्य की प्रासंगिकता

संपादक

डॉ. विद्यावती राजपूत

प्रा. धन्यकुमार बिराजदार

संत तथा शरण साहित्य की प्रासंगिकता

संपादक

डॉ. विद्यावती राजपुत

प्रा. धन्यकुमार बिराजदार

अप्र प्रकाशन
अधिकरण

प्रकाशक :

अधिकरण प्रकाशन

मकान संख्या-133, गली नम्बर-14, प्रथम तल,
बी-ब्लॉक, खजूरी खास, दिल्ली-110094
मोबाईल : 9716927587
ईमेल : adhikaranprakashan@gmail.com

प्रथम संस्करण	:	2019
आवरण चित्र	:	विद्यावती राजपूत
टाईप सेटिंग	:	मनीष कुमार सिन्हा
प्रिंटिंग	:	जी.एस. ऑफसेट, दिल्ली

© संपादक

ISBN : 978-93-87559-93-6
मूल्य : 355 रुपये

संत तथा शरण साहित्य की प्रासंगिकता(आलोचना)-सं. डॉ. विद्यावती जी. राजपूत, धन्यकुमार जिंनपाल बिरजदार

Sant Tatha Sharan Sahity Ki Prasangikata (Crticism) Edited Dr Vidyavati G Rajput Dhanya Kumar Jinpal Birajdar

अनुक्रम

भूमिका 07

संपादकीय 09

संत साहित्य की प्रासंगिकता : प्रा. धन्यकुमार बिराजदार 17

संत रैदास के साहित्य में सामाजिक चेतना 21
: डॉ. सुकन्या मेरी जे

कबीरदास और बसवेश्वर के साहित्य में लोक कल्याण 28
: डॉ. राजू बागलकोट

महान क्रान्तिकारी संत बसवेश्वर : डॉ. सुमा टी रोडनवार 32

संत कबीर और संत शिशुनाल शरीफ की रचनाओं 38
में सामाजिक चेतना : डॉ. महांतेश. आर. अंची

संत तथा शरण साहित्य का अंतःसंबंध 43
: डॉ. भारती दोडमनी

संत तथा शरण साहित्य में नैतिक मूल्य 47

: डॉ. अनीता मोहन बेलगांवकर

संत कबीरदास की साहित्य में सामाजिक चेतना
: लाल हुस्मान पेंडारी 186

संत काव्य में लोक कल्याण : प्रो. भारती जैन 190

संत साहित्य में सामाजिक चेतना : नारायण सिंह 193

वैश्विक परिप्रेक्ष्य में भारतीय संत साहित्य : संत साहित्य में सामाजिक चेतना : कविता. यु.पी. 197

वैश्विक परिप्रेक्ष्य में भारतीय संत साहित्य
: डॉ. कलावती चि. निंबालकर 202

संत कवि कबीरदास और रहीम के दोहे में जागतिक चेतना 205
: श्रीमती बहीदा खानम दाऊदजी

संत साहित्य में रविदास का योगदान : श्रीमती मंगला शिंगे 209

मीरा और अक्कमहादेवी के साहित्य में सामाजिक चेतना 214
: मेहराज बेगम ह. सैय्यद

संत और शरण साहित्य में सामाजिक चेतना 218
: डॉ. शंकर ए. राठोड

मराठी संत अणि समाज परिवर्तन : प्रा. डॉ. माधव बसवंते 224

The Teachings of Sharans 231
: Prof.(Miss.)Arathi M. Pattanda

Basavanna's Concern for Women 234
: Smt. Sujata Patted.

Comparitive Study of Sarvajnya and Santh Eknath 238
: Pratibha B

वैश्विक परिप्रेक्ष्य में भारतीय संत साहित्य : संत साहित्य में सामाजिक चेतना

–कविता यु.पी.

प्रस्तावना :– भारतीय संत साहित्य स्वर्ण युग के नाम में प्रसिद्ध भक्तिकाल का रूप है। आप रामचंद्र शुक्ल ने सम्वत 1375 वि से 1700 वि. तक के काल -खण्ड को भक्तिकाल कहा है संतों का जन्म ऐसे समय में हुआ जब समाज अनेक बुराइयों से घिरा हुआ था। उस समय इ. बराइयों पर निर्भिकता से प्रहार करने के लिए संतों का जन्म हुआ। उन्होंने सदाचार का पर देकर सामाजिक समरसत की स्थापना किये। इसमें प्रमुख, कबीर, तुलसी, दादू दयाल, रहाम, रैदास, रज्जब आदि थे। वैशिष्ट्य यह है कि आज भी यह साहित्य ना केवल भारतीय समाज में, वैश्विक परिप्रेक्ष में भी सामाजिक चेतना लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

संत कवियों ने बाह्याडम्बरों का खण्डन किया, जैसा कि मूर्ति पूजा, तीर्थाटन, व्रत, रोजा, नमाज में इन्हें कोई विश्वास न था। इसके बदले हृदय कि निर्मलता और पावनता से ईश्वर को याद करना महत्व मानते थे। "मथुरा जावै द्वारिका, भावै जावै जगन्नाथा साध संगति हरि भगति बुन, कछु न आवै हाथा।"

कबीर कहता है कि-चाहे मथुरा जाओ, चाहे द्वारिका। यदि अच्छा लगे तो जगन्नाथपुरी की भी यात्रा कर आओ। किंतु साधु संगति और हरि भक्ति बिना कुछ भी कल्याण नहीं होता है जाति, धर्म, सम्प्रदाय, वर्ण को महत्ता देकर सामाजिक कार्य प्रणाली द्वारा सही अर्थ में समाज का विकास नहीं हो पाता। लोग संकुचित घेरे में बंध जाते हैं। चंदन, तिलक, माला भेष को नमन कर उनके आश्रमों में चलनेवाले भ्रष्टाचार, अनैतिक कार्यों पर ध्यान केन्द्रित नहीं कर थे। इसे संतों ने अपने वाणि

से विरोध किये। कबीर कहते है कि-'माला फेरत जग मवा गया, मिटा न मन का फेर/ कर का मनका डारि दे मन का-मेनका फेरा'

यही बात बिहारी ने कहा कि-''जपमाला छापा तिलक, सरै न एको कामु।/ मन काँचौ नाचौ वृथा साँचौ राचौ रामु।'

हमारे संतों ने धर्म-जाति और संप्रदाय के नाम पर हो रहे विम समरसता का मार्ग सुझाया। 'हिन्दू कहें मोहि राम पियारा, तुर्क कहें रहमाना, आपस में दोउ लडी-लडी मुए, मरम न कोउ जाना।' इसका अर्थ हिन्दु राम के भक्त हैं और तुर्क को रहमन प्यारा। माह और तुके को रहमन प्यारा है। इसी बात पर दोनों लड़कर मौत के मुंह में जा पहुंचे, तब भी दोनों में से कोई सच को न जान पाया।

कबीर ने जाति, वर्ण, ऊँच-नीच का विरोध कर समझाया सभी के अंदर एक हा आला के अंश का निवास है। शरीर भिन्न हैं। सभी की आत्मिक दृष्टि से देखो, व्यवहार करो। भेदभाव न रखो जैसे-''कबीर कुआँ एक है पनिहारिन अनेकबरतन सबके न्यारे भरा, पानी सब एका' पथ प्रदर्शक कबीर, समाजिक असमानता, ऊंच-नीच आदि भेदभाव को मिठाने का प्रयास करते हुए निस्वार्थ सेवा भाव का महत्व बताते हुए कहते है कि-'बड़ा हुआ तो क्या हुआ, जैसे पेड़ खजूरा/ पंछी को छाया नहीं, फल लागे अति दूर।' अर्थात-खजूर के पेड़ के समान बड़ा होने का क्या लाभ, जो ना ठीक से किसी को छाँव दे पाता है और न ही उसके फल सुलभ होते हैं।

रहिम कहते है कि-सेवा करने केलिए बड़े होने की जरुरत नहीं है। कीचड़ भरे तालाब पशु-पक्षियों और मानव की प्यास बुझाते हैं। समुद्र तो बहुत बड़ा होता है लेकिन उसका खारा पानी किसी प्राणी की प्यास नहीं बुझाता है। ''धनि रहिम जल पंक को, लप जिय पिअत अघाय।/ उदधि बडाई कौन है, जगत पिआसो जाय॥''

संत रैदास सारे संसार की भलाई चाहनेवाले कवि हैं। उनकी कवित में सामाजिक कल्याण की भावना है। समाजिक चेतना कि दृष्टि से प्रचारक के रुप में संदेश देते हए अपनी इच्छा प्रकट किये है कि ''ऐसा चाहो राज में, जहाँ मिले सबन को अन्न। छोटा-बडो सभ-सम बस, रैदास रहै प्रसन्ना।''

रैदास चाहते है कि इस दुनिया में कोई भी भूखा न रहे। सब को पेट भर खाना में उच्च-नीच का भेद-भाव न रहे। जाती-पाँति की दिवारें न रहें। समाज मस तथा भाईचार की भावनाएं फैलें।

संत कवि जाति प्रथा के विरोधी थे। ऊँच-नीच, छुआछूत एव वण अभिशाप

मानकर इन्होंने निर्भिकता से इनका खण्डन किया। उन दिना अट ब्राह्मण वर्ग इनके आक्रोश का शिकार बना। क्योंकि निम्न वर्ग उसे छुनना भी पाप था। उदारू 'ऊँचे कुल जनमिया, जे करनी ऊच न होई/ सोवन कलस सुरै भरया, साधु निंदा साइ।'

अर्थात-यदि कोई मनुष्य ऊँचे कल में जन्मा है, किन्तु उसके कर्म ऊंचे नाह ह ता क्या लाभ? सोने का घड़ा अगर शराब से भरा हो तो भी साधु लोग ऐसे पात्र की निंदा करते है। आशय यह है कि मनुष्य कर्म से महान बनता है, जन्म से नहीं। जाति से ज्ञान को महत्व देते हुए कबीर कहते है कि-'जाति न पूछो साधु की, पूछ लीजिए ज्ञान। / मोल करो तलवार का, पड़ा रहन दो म्यान॥'' कबीर इसके द्वारा स्पष्ट कर रहे है कि-तलवार के मोल करिए और म्यान को छोड़ दिजिए। साधु कि कोई जाति, कोई धर्म नहीं होता, साधु की पहचान तो उसके ज्ञान से होती है।

गुण को पूजनीय मानते संत रैदास कहते है कि-'ब्राह्मण मत पूजिए जो होते गुणहीन,/ पूजिए चरण क्पंडाल के जो होने गुण प्रवीन॥'

संतों में निर्गुण शाखा के कई कवि जैसे कबीर, रैदास, दादू आदि मेहनत करके जीविका चलाते थे। अपने आदर्श जीवन के अनुभवों को वाणि के द्वारा प्रकट किये। मेहनत का फल मानव जीवन को सार्थकता प्रदान करने का संदेश समाज को देते हुए, कबीर जी ने श्रम द्वारा धन उपार्जन की बात कही है। इतना श्रम करो कि परिवार का पालन पोषण आराम से हो सके-'साई इतना दीजिए जामे कुटुम्ब समाय/ मैं भी भूखा न रहूँ साधु न भूखा जाय।'

रैदास अपनी बानी में -

''रैदास श्रम करि खाइहि, जो लौ पार बसाया
नेक कमाई जउ करइ, कबहु न निहफल जाय॥''

रैदास जाति में चमार थे। वे जूते बनाकर अपने घर-बार का पालन करते थे इस पद में कर्म की महत्ता का वर्णन करते, कहते है कि-हर एक व्यक्ति रोज-रोटी कमानी है। जो मानव नेक-नीयत से अपनी रोटी कमाता नहीं हो जाता, वह सार्थक होता है। या वह जूते बनाकर अपने घर-बार का पालन-पोषण करते थे। वे जो मानव नेक-नीयत से अपनी रोटी कमाता है तो उसका जीवन व्यर्थ जीवन की सार्थकता प्रेम में है। प्रेम से समाज में सामरस्य लाने के प्रयास में संत कबीर कहा- माह घट प्रेम न प्रीति रस, रसना नहीं नामा/ ते नर या संसार में, उपजी भरा बेकाम॥' इसका अर्थ-जिनके हृदय में न तो प्रीति है और न प्रेम का स्वाद, जिनकी जिहवा पर राम का नाम नहीं रहता-वे मनुष्य इस संसार में उत्पन्न होकर भी व्यर्थ हैं।

समाज में फैलाये वर्ग भेद, वर्ण भेद में वैषम्यता मिठाकर समाज को सुधार करने के लिए वे कहते थे कि-एक दिन ऐसा जरुर आएगा जब बि सबसे बिछुड़ना पडेगा, हे राजाओं! है छत्रपतियों! तुम अभी से सावधान क्यों नहीं हो जाते। ''इक दिन ऐसा होइगा, सब सूं पड़े बिछोहा/ राजा राणा छत्रपति, सावधान किन होय॥''

दया तथा सेवा का महत्व बताते हुए कबीर कहते हैं कि-''जहाँ दया तहँ धर्म है, जहाँ लोभ तहँ पापा/ जहाँ क्रोध तहँ काल है, जहाँ छिमा तहँ आप॥'

अर्थात, धर्म के अनुसार हमें सब पर दया करनी चाहिए। हमें लोभ से दूर रहना चाहिए क्योंकि लोभ पाप का जन्म होता है और मनुष्य लोभ के कारण गलत कार्यों में लग जाता है।

समाज को सचेत करते हुए तुलसी कहते है कि-'ठाढो दूर दै सकै, तुलसी जे नर नीच।/ निंदहि बलि हरिचंद को, का कियो करन दधीच॥'

वे स्वयं अपने दरवाजे पर खड़े भिखारी को कछ दे नहा सकते परंतु महादानी राजा बलि और सत्यवादी तथा दानी राजा हरिश्चद्र का न मनुष्य का निदा करते हुए तुलसी कहते है कि-'लखो गंयद ले चलत भजि स्वान सुखानो हाडा/ गज गुन मोल अहार बल महिमा जान की राडा।'

और अहिंसा के प्रबल समर्थन करते कबीर कहते कि-'संतों पांडे निपुण कसाइ। बकरा मारि भैसा पर धावै, दिल में दर्द न आई॥'

संत कबीर जर्जर समाज और अधःपतित मानव समुदाय को देखकर कलुषित चित्तवृत्तियों को सुधारने हेतु मुराडा लेकर बड़े चले थे-''कबीर खड़ा बाजार में, लिये लुकाठा हाथ/ जो घर फूंके आपना, चले हमारे साथ।

उस धार्मिक अराजकता के युग में संतों ने अपनी कठोर वाणी का प्रयोग कर तत्कालीन सामाजिक, आर्थिक, नैतिक आदि मानव जीवन में व्यप्त आशांति को दूर करके सहज साधना द्वारा जनजीवन में सुख, आनंद का संचार करने का प्रयास किया।

कबीर कहा कि-'मस्जिद भीतर मुल्ला पुकारे, क्या साहब तेरा बहिरा है। चिंउटी के पग नेवर बाजे, सोभी साहब सुनता है।'

संत रज्जब कहा कि-'देवल पास मसीत हवै, दौ न ढाहै दोई।/ रज्जब राम रहीम कहि, बोलें विधान न कोई समाज सुधारण में लगे तुलसीदास कहते है कि बुरी संगति में रहकर अच्छे मनुष्य भी बरे हो जाते हैं इसीलिए संगती की महिमा के प्रति तथा कपट विषय से समाज को सचेत करते हए कहते कि-'तुलसी किएँ कुसंग स्थिति

होहिं दाहिने बामा' और 'हृदयं कपट बर धरि बचन कहहिं गढि छोलि॥ अब के लोग भरपूर ज्यों क्यों मिलिए मन खोलि।'

काम क्रोध मद और लोभ की प्रबलता से दूर रहने का संदेश देते हुए कहते कि-'सात तीन अति प्रबल खल काम क्रोध अरु लोभा/ मुनि बिग्यान धाम मन करहिं निमेषे महँ छोभा।'

देस काल करता करम बचन विचार बिहिन/ ते सुरतरु तर दारिता अर्थात-जिस मनुष्य को देश, काल, कर्ता, कर्म और वचन का ज्ञान न पास होने पर भी दरिद्र और गंगा के तट पर निवास करे पापी रहत है।

'त सुरतरु तर दारिदी सुरसरि तीर मलीना' आर वचन का ज्ञान नहीं होता, वे कल्पवृक्ष के तुलसी कहते कि अफीम को सर्प से भी अधिक भयंकर और घातक समझना या ब्यालहु तें बिकराल बड ब्यालफेन जियें जानु।/ वहि के खाए मरत कबीर जीवन भर समाजिक बुराईयों के विरुद्द संदेश देते रह और बुराइयों के विरुद्ध संदेश देते रहे और समाज को वसुदैव कुटुंबकम का आर उत्प्रेरित करते कहते थे कि-'जाती हमारी आत्माकृप्रान हमारा नामा/ अलग हमारा इष्ट है, गगन हमारा ग्राम॥'

एक भयंकर और घातक समझना चाहिए कि 'जानु/ वहि के खाए मरत है वहि खाए बिनु प्रानु॥'

समरस-समन्वय का भाव, धार्मिक एंव साम्प्रदायिक सौहार्द भाव, सभी वर्ग लिंग के लोगों में समता का भाव आदि चिंतनधारा में संतों का योगदान वैशिष्ट्य पूण निष्कर्ष-संतों की वाणी, अमृत की वाणी महसूस होती है क्योंकि, जाति-धर्म के नाम पर छिन्न-भिन्न करके स्वार्थ-साधना को सर्वोपरि मानने वाले समाज में, मनवतावादी मूल्यों को जगाये। समाज में चेतना लाये। इसी तरह भारतीय संत साहित्य तत्कालीन समाज के लिए जैसे उपयोगी थे, उससे भी अधिक वे आज उपयोगी हैं। यह सत्य है कि एक ओर संसार विज्ञान और तकनीकी में तो काफी ऊंचाई हासिल की है, पर नैतिकता, धार्मिक सहिष्णुता आदि में और जागरुकता दिखाने की आवश्यकता है। हम आशा करते हैं कि-सामाजिक चेतना से अनुप्रणित समूच सन्त साहित्य की वाणियों के सहारे संसार अपना मार्ग प्रशस्त करेगा और पूरा विश्व में अमन का प्रकाश फैलेगा।

❑❑